REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2018

श्री मद्भगवद्गीता में जीवन मूल्य

पूनम

सारांश

भगवद्गीता को ईश्वर–संगीत कहा गया है क्योंकि भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं निर्देश किया है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध करने के लिए दार्शनिक उपदेश दिया था। भगवद्गीता हिन्दुओं का सबसे लोकप्रिय एवं पवित्र ग्रंथ है। श्रीमद्भगवद्गीता भारतीय दर्शनों का सार है 'भगवद्गीता महाभारत' के 'भीष्म–पर्व' का अंश है।

इसकी पृष्ठभूमि में महाभारत का अठारह दिन चलने वाला युद्ध है, जो अठारह अध्यायों के रूप में हमारे सामने आता है। गीता एकमात्र ऐसा ग्रंथ है जिसकी जयंती मनाई जाती हैं। गीता के 600 श्लोकों में हर उस समस्या का समाधान है, जो प्रत्येक मनुष्य के सामने कभी न कभी आती है। गीता एक धर्मग्रंथ के साथ–साथ अनुपम जीवन ग्रन्थ भी है।

श्रीमद्भागवद्गीता में बताया गया है कि बुद्धिमान व्यक्ति को स्व और पर के बंधनों से मुक्त होकर बिना आसक्ति के समाज कल्याण में अपना योगदान देना चाहिए। जो व्यक्ति आध्यात्मिक जागरूकता के शिखर पर पहुँचे चुके है – उनका मार्ग निःस्वार्थ कर्म होता है। वर्तमान समय में पूरे संसार को ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता है जो संसार को अपने महान कर्मो से कुमार्ग से सन्मार्ग पर लाने का बीड़ा उठा सकें।

जीवन में जन्म और मृत्यु दोनों का समान महत्व होता है। जन्म लेने वाले के लिए मुत्यु उतनी ही निश्चित है जितना की मृत होने वाले के लिए जन्म लेना। प्रत्येक व्यक्ति को स्वीकार करना चाहिए कि जो अपरिहार्य है उस पर शोक न करे। जन्म–मरण के चक्र में फंस कर मनुष्य को अपनी जिम्मेदारियों से मुँह नही मोड़ना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता में इस सत्य को प्रतिपादित किया गया है कि क्रोध करने पर मनुष्य के सोचने–समझने की शक्ति समाप्त हो जाती है तथा वह क्रोध से वंशीभूत होकर ऐसे फैसले लेता है, जिसके लिए बाद में उसे पछताना पड़ता है। क्रोधित व्यक्त के मुख से निकले शब्द तीर के समान घाव देते है। शरीर का घाव तो भर जाता है परन्तु कठोर वचनों से मन में गाँठे पड़ जाती है। प्रत्येक मनुष्य को अपने क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है कि परिवर्तन संसार का नियम है। जैसे ठहरा हुआ पानी सड़ जाता है और बहता पानी स्वच्छ व शुद्ध होता है, ठीक वैसे ही संसार व्याप्त परंपराओं, रीति–रिवाजों, नियमों, कानूनों आदि सभी चीजों में समय के साथ परिवत्रन होना चाहिए, तभी वे स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान दे पाएँगी। नही तो वे बाधा के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत हो जाएगी।

आज के मनुष्य को सच्चाई को स्वीकारने की बहुत अधिक जरूरत है। प्रत्येक व्यक्ति इस संसार में खाली हाथ आता है और खाली हाथ ही जाता है, मनुष्य की संचय की भावना का त्याग करके समाज कल्याण में अपना कीमती समय लगाना चाहिए। अपने महान कर्मो के आधार पर ही मनुष्य मरने के बाद भी इस संसार में अपने वजूद को कायम रख पाता है।

वर्तमान समय में गीता के नैतिक मूल्यों को जीवन में उतार कर प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सकता है। हमे कमजोर लोगों का सहारा बनकर उसे ऊपर उठाने की कोशिश करनी चाहिए, समय जब मुसीबत का हो तो आगे उठकर मानव धर्म का पालन करना चाहिए। इसलिए हमें जीवन में उदार व्यक्तित्व को महत्व देना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता हमें अन्याय के खिलाफ आवाज उठाना, उसका विरोध करना सिखाती है। श्री कृष्ण ने अन्याय को कभी स्वीकार नहीं किया। शांतिप्रिय होने के बावजूद भी शत्रु अगर गलत है तो उसके शमन में वे पीछे नही हटे। मनुष्य को कभी भी भूतकाल के लिए पश्चाताप नही करना चाहिए। उसे अपना ध्यान वर्तमान पर केन्द्रित करना चाहिए।

इस ग्रन्थ में बताया गया है कि मनुष्य को माया, धन–दौतल के जाल में नही फँसना चाहिए। यह माया मनुष्य के दुख–दर्द का उसकी चिंता का मूल कारण है। राजनीतिक मूल्यों के अन्तर्गत बताया गया है कि हमें अपने हक के लिए सदैव आवाज उठानी चाहिए और यदि आवश्यकता पड़े तो शस्त्र उठाने से भी पीछे नही हटना चाहिए। राजनीति में कोई किसी का सगा नही होता। अज्ञानी और नासमझ व्यक्ति जागरूकता की कमी के कारण स्वार्थी होता है। वह केवल स्वयं के बारे में सोचता है जबकि धर्म इसकी इजाजत नही देता।

श्रीमद्भगवद् गीता में संदेश दिया गया है कि मनुष्य को फल की चिंता छोड़कर केवल कर्म पर ध्यान देना चाहिए। यदि मनुष्य कर्म में लीन रहकर अपना कर्म पूरी ईमानदारी से करता है तो उसका परिणाम भी सकारात्मक होता है अर्थात् मनुष्य को अच्छा फल मिलता है।

इस ग्रन्थ में व्याप्त दार्शनिक मूल्यों का वर्तमान समय में विद्यमान होना अति आवश्यक है। ज्ञान का अर्थ होता है – जानने की इच्छा शक्ति। ज्ञान हमें सोचने, समझने और विचार करने की शक्ति देता है। यह चिंतन–मनन के द्वारा सही गलत की शक्ति में फर्क महसूस करने की क्षमता प्रदान करता है। ज्ञान ऐसा अक्षय तत्व है, जो कही भी, किसी अवस्था और काल में भी मनुष्य का साथ नहीं छोड़ता। ज्ञान के कारण ही समाज में परिवर्तन संभव होता है।

गीता में वश तथा अपयश ज्ञान का वर्णन किया गया है, परा ज्ञान का अर्थ है – 'आध्यात्मिक ज्ञान' और अपरा ज्ञान का अर्थ है –'सांसारिक ज्ञान'। आध्यात्मिक ज्ञान को श्रेष्ठ माना गया है।

गीता के अन्दर कर्म, ज्ञान, भक्ति, धर्म आदि को महत्व प्रदान किया गया है और इनके एकीकरण को योग की संज्ञा दी गई है। इसके द्वारा भगवान की अनुभूति होती है।

गीता में भक्ति योग विधि में नवधा भक्ति को शामिल किया गया है।

भक्ति योग में अनेक विधियों का उपयोग किया गया है। गीता में शिक्षा की विधियों को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया है। इसके उपयोग से सर्वांगीण विकास होता है। आज के आधुनिक समय में गीता महान शिक्षा ग्रन्थ है।

अतः कहा जा सकता है कि श्रीमद्भगवद् गीता में विद्यमान, धार्मिक, नैतिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक इत्यादि जीवन मूल्यों का राष्ट्रीय व अंतराष्ट्रीय स्तर पर अमूल्य योगदान है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. (टीकाकार) चंद्रकुमार झा, श्रीमद्भगवद्गीता – एक त्रिकशास्त्रीय परिशीलन।
2. (टीकाकार) जयदयाल गोयंदका, श्रीमद्भगवद्गीता – तत्त्व विवेचनों हिन्दी टीका।

पूनम